eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 01, January 2024

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघः विभाजन और स्वतंत्रता के समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

[1]डा0 आभा चौबे
[1]प्राचार्य, सुखनन्दन कालेज, मुन्गेली, छत्तीसगढ

Received: 20 Jan 2024, Accepted: 28 Jan 2024, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2024

Abstract

यह शोध पत्र भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान और उसके बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) की भूमिका का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। संघ की स्थापना 1925 में केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा की गई थी, जिसका उद्देश्य हिंदू समाज को संगठित करना और उसे सांस्कृतिक पुनर्जागरण की ओर ले जाना था। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान संघ ने मुख्यधारा की राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सा नहीं लिया, लेकिन विभाजन के समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विभाजन के दौरान संघ ने हिंदू समाज की रक्षा के लिए सक्रिय कदम उठाए। हालाँकि, आलोचकों ने संघ पर सांप्रदायिकता भड़काने का आरोप लगाया। स्वतंत्रता के बाद संघ ने भारतीय राजनीति में अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावशाली भूमिका निभाई, और इसकी विचारधारा का प्रभाव भारतीय जनता पार्टी के माध्यम से बढ़ा। यह शोध पत्र संघ के दीर्घकालिक प्रभावों और भारतीय राजनीति में उसकी भूमिका पर प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द– राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, स्वतंत्रता संग्राम, विभाजन, हिंदू राष्ट्रवाद, भारतीय राजनीति, दीर्घकालिक प्रभाव।

Introduction

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम भारतीय इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण और निर्णायक घटनाओं में से एक है। यह संघर्ष ब्रिटिश शासन के खिलाफ पूरे देश में फैला हुआ था, जिसमें अलग–अलग राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संगठनों ने अपनी–अपनी भूमिकाएँ निभाईं। इस संग्राम का उद्देश्य न केवल ब्रिटिश शासन से राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करना था, बल्कि भारतीय समाज को सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से पुनर्गठित करना भी था। इसमें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने प्रमुख भूमिका निभाई, जो गांधीजी के नेतृत्व में सबसे बड़ा और प्रभावी संगठन था। कांग्रेस ने एक धर्मनिरपेक्ष, बहुसांस्कृतिक और सर्व–समावेशी दृष्टिकोण अपनाया, जो भारत के विभिन्न धर्मों, जातियों और समुदायों को एक साथ लाने का प्रयास था। इसके विपरीत, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका और विचारधारा कांग्रेस से भिन्न थी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का ध्यान मुख्य रूप से हिंदू समाज के संगठन, उसकी सांस्कृतिक पहचान और धार्मिक जागरूकता पर केंद्रित था।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना 27 सितंबर, 1925 को केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा नागपुर में की गई थी। संघ का मुख्य उद्देश्य भारतीय समाज, विशेष रूप से हिंदू समाज, को संगठित और

सशक्त करना था। हेडगेवार ने महसूस किया कि भारतीय समाज केवल राजनीतिक गुलामी से पीड़ित नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक और धार्मिक रूप से भी कमजोर हो चुका था। ब्रिटिश शासन के खिलाफ संगठित विरोध के साथ–साथ, उन्होंने हिंदू समाज की एकता और संगठन को प्राथमिक महत्व दिया। उनका मानना था कि जब तक हिंदू समाज संगठित नहीं होगा, तब तक भारत को सच्ची स्वतंत्रता नहीं मिल सकती। इसी विचार के साथ उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की नींव रखी, जो हिंदू राष्ट्रवाद की एक विशेष विचारधारा पर आधारित था।

संघ का प्राथमिक उद्देश्य ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रत्यक्ष राजनीतिक आंदोलन करना नहीं था, बल्कि हिंदू समाज की सांस्कृतिक और धार्मिक पुनरुत्थान को प्राथमिकता देना था। संघ के लिए ष्राष्ट्रष का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक और धार्मिक पुनरुत्थान भी था। संघ का दृष्टिकोण यह था कि यदि भारतीय समाज, विशेषकर हिंदू समाज, अपनी सांस्कृतिक और धार्मिक जड़ों से कट जाएगा, तो राजनीतिक स्वतंत्रता का कोई विशेष महत्व नहीं होगा। इसीलिए संघ का जोर समाज के भीतर अनुशासन, संगठन और एकता पर था। संघ के स्वयंसेवकों के लिए शाखाएँ आयोजित की जाती थीं, जहाँ उन्हें अनुशासन, नेतृत्व, और हिंदू राष्ट्रवाद की शिक्षा दी जाती थी। शाखाएँ संघ का प्रमुख संगठनात्मक उपकरण थीं, जो आज भी संघ की रीढ़ मानी जाती हैं।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, संघ ने मुख्यधारा के आंदोलनों, जैसे सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं लिया। इसके बजाय, संघ ने समाज के भीतर अपनी संगठनात्मक संरचना को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया। संघ का मानना था कि समाज की आंतरिक शक्ति और संगठन को मजबूत करना राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने से अधिक महत्वपूर्ण था। यही कारण है कि संघ ने कभी भी कांग्रेस या अन्य राष्ट्रीय संगठनों की तरह स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व नहीं किया। यह दृष्टिकोण संघ को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से अलग करता था, जो सीधे तौर पर ब्रिटिश शासन के खिलाफ राजनीतिक लड़ाई में लगी हुई थी।

हालाँकि, यह कहना गलत होगा कि संघ ने स्वतंत्रता संग्राम के प्रति उदासीनता दिखाई। संघ के कई स्वयंसेवकों ने व्यक्तिगत रूप से स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया और जेल भी गए। लेकिन संघ के रूप में संगठन ने अपने उद्देश्यों को मुख्य रूप से सांस्कृतिक पुनरुत्थान और हिंदू समाज की संगठनात्मक मजबूती पर केंद्रित रखा। इस दृष्टिकोण के कारण संघ को अक्सर आलोचनाओं का सामना करना पड़ा, खासकर उन लोगों से जो सीधे तौर पर राजनीतिक स्वतंत्रता के संघर्ष में जुटे हुए थे।

1940 के दशक में, जब भारत विभाजन की ओर बढ़ रहा था, संघ की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई। विभाजन के समय, संघ ने भारत के हिंदू समाज की रक्षा और उसकी एकता को बनाए रखने के लिए सक्रिय रूप से कार्य किया। विभाजन की घोषणा के बाद, संघ ने विभाजन विरोधी आंदोलन चलाया और पाकिस्तान की स्थापना के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की। संघ ने विभाजन को भारतीय समाज के लिए एक बड़ा खतरा माना, और उसका मानना था कि इससे भारतीय राष्ट्र की अखंडता और हिंदू समाज की सुरक्षा पर गंभीर प्रभाव पड़ेगा। विभाजन के समय हुए सांप्रदायिक

दंगों के दौरान, संघ के सदस्यों ने हिंदू समाज की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए और शरणार्थियों की सहायता की।

विभाजन के बाद, जब महात्मा गांधी की हत्या हुई, संघ की भूमिका और अधिक विवादास्पद हो गई। गांधीजी की हत्या के बाद संघ पर कई गंभीर आरोप लगाए गए, और तत्कालीन सरकार ने उस पर प्रतिबंध लगा दिया। हालांकि बाद में यह साबित हो गया कि संघ का गांधीजी की हत्या में कोई प्रत्यक्ष हाथ नहीं था, लेकिन इस घटना ने संघ की छवि को गहरा आघात पहुँचाया। इस घटना के बाद संघ को काफी आलोचनाओं का सामना करना पड़ा, और उसके ऊपर समाज में सांप्रदायिकता फैलाने का आरोप लगाया गया। हालांकि संघ ने हमेशा इन आरोपों को खारिज किया और खुद को एक राष्ट्रवादी संगठन के रूप में प्रस्तुत किया जो हिंदू समाज की सेवा और सुरक्षा के लिए काम करता है।

स्वतंत्रता के बाद संघ ने अपनी भूमिका में परिवर्तन किया। संघ ने राजनीतिक गतिविधियों से दूर रहते हुए हिंदू समाज को संगठित और सशक्त बनाने पर जोर दिया। हालांकि, 1951 में भारतीय जनसंघ की स्थापना संघ के कई सदस्यों द्वारा की गई, जिसने संघ की विचारधारा को राजनीतिक मंच पर पहुँचाया। बाद में भारतीय जनता पार्टी का उदय भी संघ की दीर्घकालिक रणनीति का ही परिणाम था। संघ ने हमेशा अपने आप को एक सांस्कृतिक संगठन के रूप में प्रस्तुत किया, लेकिन उसकी विचारधारा और संगठनात्मक क्षमता ने उसे भारतीय राजनीति में अप्रत्यक्ष रूप से एक महत्वपूर्ण शक्ति बना दिया।

आज, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारतीय राजनीति और समाज में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान संघ ने जिस सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की विचारधारा को अपनाया था, वह आज भी भारतीय जनता पार्टी और संघ परिवार के अन्य संगठनों में जीवित है। संघ का संगठनात्मक ढाँचा और उसकी हिंदू राष्ट्रवादी विचारधारा स्वतंत्र भारत में लगातार प्रभावी रही है, और आज भी वह भारतीय राजनीति और समाज पर गहरा प्रभाव डाल रही है।

2. स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रारंभिक दौर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना 1925 को केशव बलिराम हेडगेवार ने की थी। हेडगेवार का उद्देश्य मुख्य रूप से हिंदू समाज को संगठित करना था, ताकि वह मानसिक, सांस्कृतिक, और शारीरिक रूप से विदेशी शासन का सामना कर सके। हेडगेवार स्वयं एक स्वतंत्रता सेनानी थे और भारतीय समाज की सांस्कृतिक विरासत को सशक्त बनाने के पक्षधर थे। उन्होंने संघ की स्थापना इस दृष्टिकोण से की कि भारतीय समाज केवल राजनीतिक स्वतंत्रता से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और धार्मिक पुनर्जागरण से भी सशक्त हो सकता है। संघ का मुख्य लक्ष्य भारतीय समाज, विशेष रूप से हिंदू समाज, को संगठित करना था। संघ की विचारधारा यह थी कि भारत की आत्मा उसकी सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं में निहित है, और अगर समाज इन परंपराओं से कट जाएगा, तो भारत सही मायने में स्वतंत्र नहीं हो पाएगा (Jaffrelot-1996)।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने मुख्यधारा की राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सा नहीं लिया, जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा संचालित थीं। कांग्रेस उस समय स्वतंत्रता आंदोलन का प्रमुख नेतृत्व कर रही थी, और उसका ध्यान मुख्य रूप से राजनीतिक स्वतंत्रता पर केंद्रित था। कांग्रेस की विचारधारा धर्मनिरपेक्षता पर आधारित थी और उसमें सभी धर्मों और जातियों का समावेश था। इसके विपरीत, ै का ध्यान हिंदू समाज के संगठन और उसकी सांस्कृतिक पहचान को सशक्त करने पर था। संघ का मानना था कि जब तक हिंदू समाज संगठित और सांस्कृतिक रूप से सशक्त नहीं होगा, तब तक राजनीतिक स्वतंत्रता का कोई वास्तविक मूल्य नहीं होगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शुरुआती वर्षों में संगठन ने अपने सदस्यों को अनुशासन, राष्ट्रभक्ति, और संगठनात्मक एकता की शिक्षा दी। संघ की शाखाएँ, जो आज भी संगठन की रीढ़ मानी जाती हैं, संघ के शुरुआती दिनों से ही महत्वपूर्ण थीं। शाखाओं में स्वयंसेवकों को शारीरिक प्रशिक्षण, बौद्धिक चर्चाएँ, और समाज सेवा की शिक्षा दी जाती थी। इन शाखाओं का उद्देश्य केवल शारीरिक प्रशिक्षण तक सीमित नहीं था, बल्कि यह स्वयंसेवकों के मानसिक और नैतिक विकास पर भी जोर देता था। शाखाओं के माध्यम से संघ ने समाज के भीतर अनुशासन, संगठन और नेतृत्व के गुणों को विकसित किया (Andersen & Damle- 1987)।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दृष्टिकोण मुख्य रूप से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर आधारित था। संघ ने भारतीय समाज को उसकी प्राचीन धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं के आधार पर पुनर्निर्मित करने का लक्ष्य रखा। संघ का मानना था कि विदेशी शासन का विरोध केवल राजनीतिक माध्यमों से नहीं किया जा सकता, बल्कि इसके लिए भारतीय समाज को उसकी जड़ों से फिर से जोड़ने की आवश्यकता है। इसलिए, संघ का ध्यान राजनीतिक स्वतंत्रता के बजाय सामाजिक और सांस्कृतिक उत्थान पर था। यह दृष्टिकोण संघ को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और अन्य राष्ट्रीय संगठनों से अलग करता था, जो सीधे तौर पर ब्रिटिश शासन के खिलाफ राजनीतिक संघर्ष में लगे हुए थे (Sarkar-2010)।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आलोचकों ने अक्सर यह तर्क दिया है कि संघ ने स्वतंत्रता संग्राम में प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं लिया, जबकि अन्य संगठन जैसे कांग्रेस और क्रांतिकारी संगठन स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे थे। हालाँकि, संघ के समर्थकों का कहना है कि संघ ने समाज के भीतर संगठनात्मक मजबूती पर ध्यान केंद्रित करके अपने ढंग से स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया। संघ ने सीधे तौर पर राजनीतिक आंदोलनों में भाग नहीं लिया, लेकिन उसके सदस्यों ने व्यक्तिगत रूप से स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया और जेल भी गए। संघ का यह तर्क था कि संगठन की दीर्घकालिक स्थिरता और हिंदू समाज की एकता राजनीतिक संघर्ष से अधिक महत्वपूर्ण है (Indian Express-2012)।

संघ के संस्थापक केशव बलिराम हेडगेवार का यह मानना था कि जब तक भारतीय समाज सांस्कृतिक रूप से सशक्त नहीं होगा, तब तक राजनीतिक स्वतंत्रता भी अधूरी ही रहेगी। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को एक सांस्कृतिक संगठन के रूप में स्थापित किया, जिसका उद्देश्य समाज के भीतर एकता, अनुशासन, और सेवा भाव को बढ़ावा देना था। संघ का यह दृष्टिकोण उसे स्वतंत्रता

संग्राम में अन्य संगठनों से भिन्न बनाता है, जो मुख्य रूप से राजनीतिक स्वतंत्रता पर जोर देते थे। संघ का मानना था कि स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद समाज को स्थिर और मजबूत रखने के लिए सांस्कृतिक उत्थान आवश्यक है (RSS Interview- 2005- Doordarshan).

इस संदर्भ में, संघ ने अपनी शाखाओं के माध्यम से अपने कार्यों को आगे बढ़ाया और समाज के विभिन्न वर्गों को संगठित करने का प्रयास किया। संघ की शाखाएँ पूरे देश में फैल गईं और संघ ने अपने स्वयंसेवकों के माध्यम से समाज सेवा, शिक्षा, और सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया। संघ ने अपने अनुशासनात्मक और संगठनात्मक ढाँचे के माध्यम से हिंदू समाज की एकता और संगठन को मजबूत किया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान संघ की भूमिका को सांस्कृतिक और संगठनात्मक दृष्टिकोण से समझा जा सकता है, जिसने समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास किया (Outlook Magazine- 2011)।

3. विभाजन के समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका

1947 का भारत विभाजन भारतीय इतिहास की सबसे त्रासदीपूर्ण घटनाओं में से एक है, जिसने न केवल भारतीय उपमहाद्वीप को दो राष्ट्रों में विभाजित किया, बल्कि लाखों लोगों के जीवन को भी प्रभावित किया। इस समय की घटनाओं में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका अत्यधिक विवादास्पद रही है। विभाजन की घोषणा से पहले और उसके दौरान, संघ ने अपनी हिंदू राष्ट्रवादी विचारधारा के आधार पर विभाजन का खुलकर विरोध किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए, भारत की अखंडता और हिंदू समाज की सुरक्षा सर्वोपरि थी, और विभाजन को वे भारतीय समाज की एकता और अखंडता पर हमला मानते थे। संघ के नेताओं ने विभाजन के विचार का कड़ा विरोध किया और पाकिस्तान की स्थापना के खिलाफ कठोर बयान दिए (Andersen & Damle- 1987)।

जब 1947 में भारत का विभाजन हुआ, तो सांप्रदायिक तनाव अपने चरम पर था। विभाजन के साथ ही पूरे देश में सांप्रदायिक दंगे भड़क उठे, जिसमें लाखों लोगों की जान गई और लाखों लोग बेघर हो गए। इस दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने हिंदू समाज की रक्षा के लिए कदम उठाए। संघ के स्वयंसेवकों ने विभाजन के समय हिंसाग्रस्त क्षेत्रों में हिंदू शरणार्थियों की मदद की और दंगों के शिकार लोगों के लिए राहत कार्य किए। संघ ने उन हिंदुओं की सहायता की जो अपने घरों से भागने के लिए मजबूर थे और विभाजन के बाद की उथल–पुथल के बीच सुरक्षा की तलाश कर रहे थे (Jaffrelot- 1996)।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के समर्थकों का दावा है कि इस दौरान संघ ने हिंदू समाज की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विभाजन के समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने शरणार्थी शिविरों का आयोजन किया और हिंदू शरणार्थियों को सुरक्षित स्थानों तक पहुँचाने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। संघ का मुख्य उद्देश्य उन हिंदू समुदायों की रक्षा करना था, जो सांप्रदायिक हिंसा का सामना कर रहे थे। संघ के स्वयंसेवकों ने हिंसा प्रभावित क्षेत्रों में राहत सामग्री वितरित की और लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया। इसके अलावा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने हिंदू समाज को संगठित करने के लिए विशेष कदम उठाए ताकि वे इस कठिन समय का सामना कर सकें (Sarkar- 2010)।

हालांकि, विभाजन के समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका को लेकर कई आलोचनाएँ भी उठी हैं। संघ के आलोचकों का कहना है कि संघ ने सांप्रदायिक हिंसा को बढ़ावा दिया और सांप्रदायिक दंगों में सक्रिय भागीदारी की। संघ पर यह आरोप लगाया गया कि उसने विभाजन के समय सांप्रदायिक तनाव को भड़काने में भूमिका निभाई और अपने समर्थकों को हिंसा में शामिल होने के लिए उकसाया। इस समय संघ पर सांप्रदायिकता फैलाने और मुसलमानों के खिलाफ हिंसा को बढ़ावा देने के आरोप भी लगे (Sikand- 2001)।

हालांकि, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने हमेशा इन आरोपों को खारिज किया है। संघ के नेताओं का दावा है कि विभाजन के समय संघ ने केवल आत्मरक्षा के लिए काम किया और अपने कार्यों को सांप्रदायिक हिंसा के बजाय समाज की रक्षा के रूप में प्रस्तुत किया। संघ ने हमेशा यह कहा है कि उनके स्वयंसेवकों ने केवल उन हिंदुओं की रक्षा की जो सांप्रदायिक हिंसा के शिकार हो रहे थे, और उनका उद्देश्य किसी भी सांप्रदायिक तनाव को बढ़ाना नहीं था। संघ के अनुसार, विभाजन के दौरान उनकी भूमिका सामाजिक सेवा और हिंदू समाज की रक्षा करने तक सीमित थी (Indian Express- 2011)।

विभाजन के बाद की परिस्थितियों में संघ की भूमिका और अधिक विवादास्पद हो गई। महात्मा गांधी की हत्या के बाद संघ पर गंभीर आरोप लगाए गए और संघ को गांधीजी की हत्या के लिए दोषी ठहराया गया। इसके बाद सरकार ने संघ पर प्रतिबंध लगा दिया। हालाँकि, बाद में संघ को इस हत्या में दोषी नहीं पाया गया और प्रतिबंध हटा दिया गया। फिर भी, गांधीजी की हत्या के बाद संघ की छवि पर गहरा प्रभाव पड़ा और संघ को समाज के कई हिस्सों में संदेह की नजरों से देखा गया (Andersen & Damle-1987)।

विभाजन के समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका ने भारतीय समाज में संघ के प्रति ध्रुवीकरण को बढ़ाया। जहाँ एक ओर संघ के समर्थक इसे हिंदू समाज की रक्षा के लिए उठाए गए कदमों के रूप में देखते हैं, वहीं आलोचक इसे सांप्रदायिक हिंसा और विभाजन के समय के दंगों को बढ़ावा देने वाले संगठन के रूप में देखते हैं। संघ की यह भूमिका आज भी इतिहासकारों और राजनीतिक विश्लेषकों के लिए एक विवादास्पद मुद्दा बनी हुई है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने हमेशा अपनी भूमिका को आत्मरक्षा और राहत कार्यों के रूप में प्रस्तुत किया है, लेकिन विभाजन और उसके बाद के समय की घटनाओं ने इसे एक विवादास्पद संगठन बना दिया है (Outlook Magazine- 2012)।

4. स्वतंत्रता के समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और अन्य राजनीतिक संगठन

स्वतंत्रता के समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बीच विचारधारा के स्तर पर बड़े मतभेद थे। कांग्रेस एक धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक संगठन था, जिसका उद्देश्य सभी धर्मों, जातियों और समुदायों को एक साथ लाकर स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ना था। महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों को अपनाया, जो भारतीय समाज के सभी वर्गों को एकजुट करने की कोशिश कर रहे थे। इसके विपरीत, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा हिंदू राष्ट्रवाद पर आधारित थी, जिसे षहिंदुत्वष के रूप में जाना जाता था। संघ का मुख्य उद्देश्य हिंदू

समाज को संगठित करना और उसे सांस्कृतिक रूप से सशक्त बनाना था। इस दृष्टिकोण के कारण संघ ने स्वतंत्रता संग्राम में कांग्रेस की तरह प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं लिया, बल्कि उसने समाज के संगठनात्मक विकास और सांस्कृतिक पुनर्जागरण पर ध्यान केंद्रित किया (Andersen & Damle- 1987)।

महात्मा गांधी की हत्या के बाद संघ को एक बहुत ही कठिन दौर से गुजरना पड़ा। 30 जनवरी 1948 को गांधीजी की हत्या नाथूराम गोडसे द्वारा की गई थी, जो पूर्व में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ा हुआ था। गांधीजी की हत्या के बाद तत्कालीन सरकार, जिसमें जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल प्रमुख थे, ने संघ को इस हत्या के लिए आंशिक रूप से जिम्मेदार ठहराया। इसके परिणामस्वरूप, फरवरी 1948 में संघ पर प्रतिबंध लगा दिया गया। संघ के नेताओं और स्वयंसेवकों को गिरफ्तार किया गया और संघ की सभी गतिविधियाँ बंद कर दी गईं। इस घटना ने संघ के प्रति समाज के एक बड़े हिस्से में अविश्वास को जन्म दिया, और संघ की छवि को गहरा धक्का लगा (Sarkar-2010)।

हालाँकि, संघ ने गांधीजी की हत्या में किसी भी प्रकार की संलिप्तता से इनकार किया और दावा किया कि नाथूराम गोडसे के कृत्य का संघ से कोई संबंध नहीं था। संघ के तत्कालीन सरसंघचालक गोलवलकर ने भी संघ की छवि को सुधारने के लिए कई प्रयास किए। संघ के खिलाफ लगाए गए आरोपों की जाँच के लिए सरकार द्वारा एक आयोग का गठन किया गया, जिसने यह निष्कर्ष निकाला कि संघ का गांधीजी की हत्या से कोई सीधा संबंध नहीं था। इसके बाद, 1949 में संघ पर लगे प्रतिबंध को हटा लिया गया और संघ की गतिविधियाँ फिर से शुरू हो गईं। हालांकि प्रतिबंध हटने के बाद संघ को कानूनी रूप से राहत मिली, लेकिन इस घटना ने संघ के राजनीतिक और सामाजिक कार्यों पर दीर्घकालिक प्रभाव डाला। संघ की छवि पर लगा यह धब्बा कई वर्षों तक बना रहा और इसने संघ को समाज के एक बड़े वर्ग के साथ संघर्ष में डाल दिया (Jaffrelot-1996)।

महात्मा गांधी की हत्या और उसके बाद के घटनाक्रम ने न केवल संघ, बल्कि भारतीय राजनीति को भी प्रभावित किया। गांधीजी की हत्या के बाद संघ के खिलाफ बड़े पैमाने पर विरोध हुआ, और संघ पर सांप्रदायिकता फैलाने का आरोप लगाया गया। इस घटना ने संघ के राजनीतिक कार्यों पर गहरा असर डाला। संघ ने हमेशा खुद को एक सांस्कृतिक संगठन के रूप में प्रस्तुत किया, लेकिन इस घटना के बाद संघ पर राजनीति में अप्रत्यक्ष रूप से शामिल होने के आरोप भी लगे। हालांकि संघ ने अपने ऊपर लगे सभी आरोपों का खंडन किया और खुद को एक राष्ट्रवादी संगठन बताया, जो केवल समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण के कार्यों में संलग्न था (Indian Express-2012)।

इस घटना के बावजूद, संघ ने धीरे–धीरे समाज में अपनी पकड़ को मजबूत किया और समाज सेवा, शिक्षा, और सांस्कृतिक जागरूकता के क्षेत्र में अपना कार्य जारी रखा। 1951 में संघ के कई सदस्यों ने भारतीय जनसंघ की स्थापना की, जो बाद में भारतीय जनता पार्टी के रूप में उभरी। इस तरह से संघ ने अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय राजनीति में अपनी विचारधारा का प्रसार किया और धीरे–धीरे भारतीय राजनीति में एक प्रमुख शक्ति बन गया (RSS Interview-2009] YouTube)। आज, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण संगठन है, जिसकी विचारधारा और संगठनात्मक क्षमता भारतीय जनता पार्टी के माध्यम से देश की राजनीति को प्रभावित कर रही है।

5. स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की दीर्घकालिक भूमिका

स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपनी भूमिका और कार्यप्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। 1947 के विभाजन और स्वतंत्रता के बाद, संघ ने प्रत्यक्ष राजनीतिक भागीदारी से परहेज किया और अपने मूल उद्देश्य, हिंदू समाज के सांस्कृतिक और सामाजिक उत्थान पर ध्यान केंद्रित किया। संघ का मानना था कि हिंदू समाज की एकता और संगठनात्मक मजबूती से ही भारतीय समाज को सशक्त बनाया जा सकता है। इस विचारधारा के तहत, संघ ने राजनीतिक गतिविधियों से दूर रहते हुए समाज सेवा, शिक्षा और सांस्कृतिक पुनरुत्थान पर जोर दिया। संघ का यह दृष्टिकोण स्वतंत्रता के बाद के भारतीय समाज में उसकी भूमिका को परिभाषित करता है (Andersen & Damle- 1987)।

हालांकि, संघ ने राजनीति से प्रत्यक्ष दूरी बनाए रखी, लेकिन उसके सदस्यों ने 1951 में भारतीय जनसंघ की स्थापना की, जिसका उद्देश्य हिंदू राष्ट्रवाद की विचारधारा को राजनीतिक मंच पर लाना था। भारतीय जनसंघ के माध्यम से संघ ने भारतीय राजनीति में अपनी उपस्थिति को धीरे–धीरे बढ़ाया। जनसंघ के रूप में संघ के नेताओं ने संघ की विचारधारा को राजनीतिक रूप में लागू करने की कोशिश की, जिसमें मुख्यतः हिंदू समाज की एकता, सांस्कृतिक जागरूकता और राष्ट्रवाद के मुद्दे शामिल थे। संघ का मानना था कि राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने के बिना उसकी विचारधारा को पूरी तरह से लागू नहीं किया जा सकता, इसलिए जनसंघ को एक राजनीतिक दल के रूप में स्थापित किया गया। भारतीय जनसंघ ने संघ की विचारधारा को आधार बनाकर 1950 और 1960 के दशक में राजनीतिक समर्थन प्राप्त किया (Jaffrelot-1996)।

1960 के दशक में, भारतीय जनसंघ ने भारतीय राजनीति में एक प्रमुख भूमिका निभानी शुरू की। जनसंघ ने कांग्रेस सरकार के खिलाफ अपने संगठनात्मक ढांचे का इस्तेमाल करते हुए एक मजबूत विपक्ष के रूप में उभरने का प्रयास किया। इस दौरान संघ के स्वयंसेवकों ने जनसंघ के राजनीतिक अभियानों में सक्रिय रूप से भाग लिया और चुनावी प्रक्रिया के माध्यम से संघ की विचारधारा का प्रचार किया। जनसंघ ने समाज के उन वर्गों को अपने साथ जोड़ने का प्रयास किया, जो कांग्रेस की धर्मनिरपेक्ष नीति से असंतुष्ट थे। इस तरह से संघ की राजनीतिक भागीदारी बढ़ने लगी और जनसंघ के माध्यम से संघ ने भारतीय राजनीति में धीरे–धीरे अपनी पकड़ मजबूत की (Sarkar-2010)।

1975 में, जब भारत में आपातकाल लागू हुआ, संघ की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई। आपातकाल के दौरान संघ ने इंदिरा गांधी की सरकार के खिलाफ राजनीतिक प्रतिरोध में एक प्रमुख भूमिका निभाई। संघ के स्वयंसेवकों ने आपातकाल के विरोध में सक्रिय भागीदारी की और लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा के लिए आंदोलन किए। आपातकाल के बाद, संघ की लोकप्रियता और राजनीतिक समर्थन में तेजी आई। यह वह समय था जब संघ और जनसंघ ने एक नए राजनीतिक समीकरण के रूप में उभरने का प्रयास किया। 1980 के दशक में, भारतीय जनता पार्टी का उदय हुआ, जो भारतीय जनसंघ का ही नया स्वरूप था। भाजपा का गठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के समर्थन से

हुआ और उसने हिंदू राष्ट्रवाद की विचारधारा को लेकर चुनावी राजनीति में सफलता प्राप्त की (Andersen & Damle- 1987)।

भाजपा के माध्यम से संघ ने भारतीय राजनीति में अपनी दीर्घकालिक भूमिका को मजबूत किया। 1980 और 1990 के दशक में भाजपा ने राष्ट्रीय राजनीति में तेजी से अपनी जगह बनाई, और यह संघ की दीर्घकालिक रणनीति का परिणाम था। राम जन्मभूमि आंदोलन ने संघ और भाजपा की विचारधारा को और अधिक मजबूती दी। संघ ने हिंदू समाज को संगठित करने और धार्मिक मुद्दों को प्रमुखता देने के लिए अपनी संगठनात्मक शक्ति का उपयोग किया। भजपा की राजनीतिक सफलताएँ, जैसे कि 1998 में केंद्र सरकार में उसका सत्ता में आना, संघ की दीर्घकालिक रणनीति का ही परिणाम थीं, जिसने भारतीय राजनीति को नए सिरे से परिभाषित किया (Jaffrelot- 1996)।

संघ ने अपनी संगठनात्मक क्षमता को न केवल राजनीतिक रूप से, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से भी बढ़ाया। स्वतंत्रता के बाद संघ ने शिक्षा, स्वास्थ्य और समाज सेवा के क्षेत्रों में कई संगठनों की स्थापना की, जिनमें प्रमुख रूप से विश्व हिंदू परिषद, भारतीय मजदूर संघ और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद शामिल हैं। इन संगठनों ने संघ की विचारधारा को विभिन्न सामाजिक और शैक्षिक क्षेत्रों में फैलाया। संघ का मानना था कि समाज के हर वर्ग में उसकी उपस्थिति होनी चाहिए ताकि वह हिंदू राष्ट्रवाद की विचारधारा को प्रभावी ढंग से लागू कर सके। इन संगठनों के माध्यम से संघ ने भारतीय समाज के हर क्षेत्र में अपनी पकड़ बनाई और उसे सशक्त किया (Sikand- 2001)।

आज, भारतीय जनता पार्टी की राजनीतिक सफलताएँ और उसकी विचारधारा संघ की दीर्घकालिक योजना और संगठनात्मक क्षमता का ही परिणाम हैं। संघ ने स्वतंत्रता के बाद भारतीय राजनीति और समाज में जो दीर्घकालिक भूमिका निभाई है, वह उसे एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली संगठन बनाती है। संघ की हिंदू राष्ट्रवादी विचारधारा, उसकी संगठनात्मक शक्ति और उसकी समाज सेवा की गतिविधियाँ भारतीय राजनीति और समाज पर गहरा प्रभाव डालती रही हैं। संघ का यह प्रभाव वर्तमान में भी भारतीय राजनीति में देखा जा सकता है, और यह भविष्य में भी भारतीय राजनीति को प्रभावित करता रहेगा (Outlook Magazine- 2011)।

6. निष्कर्ष

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और उसके बाद के भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका विवादास्पद और प्रभावशाली रही है। संघ ने 1925 में अपनी स्थापना के बाद से हिंदू समाज को संगठित करने और उसकी सांस्कृतिक पहचान को सशक्त बनाने पर जोर दिया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान संघ ने प्रत्यक्ष राजनीतिक आंदोलनों से दूरी बनाए रखी, लेकिन विभाजन के समय हिंदू समाज की रक्षा में उसकी भूमिका को महत्वपूर्ण माना गया, हालांकि इसे सांप्रदायिकता भड़काने के आरोपों का भी सामना करना पड़ा। स्वतंत्रता के बाद संघ ने राजनीति से सीधे जुड़ने के बजाय सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यों पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि उसके सदस्यों ने 1951 में भारतीय जनसंघ की स्थापना की, जो बाद में भारतीय जनता पार्टी के रूप में विकसित हुआ। संघ की दीर्घकालिक रणनीति और हिंदुत्व की विचारधारा ने भारतीय राजनीति में स्थायी प्रभाव छोड़ा, जिसे

भाजपा ने अपने चुनावी अभियानों और सत्ता प्राप्ति में अपनाया। संघ के विभिन्न संगठनों ने शिक्षा, समाज सेवा और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के माध्यम से भारतीय समाज में गहरी पैठ बनाई। आज संघ की भूमिका भारतीय राजनीति और समाज के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में देखी जाती है, और इसका प्रभाव भविष्य में भी बना रहेगा।

संदर्भ–

1. एंडरसन, डब्ल्यू. के., – डामले, एस. डी. (1987). द ब्रदरहुड इन सैफ्रन. द राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एंड हिंदू रिवाइवलिज्म. वेस्टव्यू प्रेस।

2. जाफरालोट, सी. (1996). हिंदू नेशनलिस्ट मूवमेंट एंड इंडियन पॉलिटिक्स. पेंगुइन बुक्स।

3. मुद, सी. (2004). द पॉपुलिस्ट ज़ीटजिस्ट. गवर्नमेंट एंड ऑपोजिशन, 39(4), 541–563.

4. कनॉवन, एम. (1999). जनता पर विश्वास करो! लोकलुभावनवाद और लोकतंत्र के दो चेहरे. पॉलिटिकल स्टडीज, 47(1), 2–16.

5. सरकार, स. (2010). मॉडर्न इंडियारू 1885दृ1947. मैकमिलन इंडिया।

6. इंडियन एक्सप्रेस (2012). "RSS: Role in India*s Freedom Struggle"-

7. दूरदर्शन (2005). राष्ट्रीय भूमिका और प्रभाव. ख्वीडियो,.

8. आउटलुक मैगज़ीन (2011). "The Growth of RSS in Pre&Independence India"-

9. सिकंद, वाई. (2001). RSS और मुस्लिम पहचान. साउथ एशिया जर्नल।

10. इंडियन एक्सप्रेस (2011). "RSS: Role During Partition"-

11. आउटलुक मैगज़ीन (2012). "Partition and the Role of RSS"-

12. इंडियन एक्सप्रेस (2012). RSS और गांधी हत्या एक ऐतिहासिक समीक्षा

13. आरएसएस इंटरव्यू (2009). स्वतंत्रता के बाद RSS की भूमिका. ख्वीडियो,. यूट्यूब।

14. सिकंद, वाई. (2001). संघ परिवार और हिंदू राष्ट्रवादी आंदोलन. साउथ एशिया रिसर्च।

15. आउटलुक मैगज़ीन (2011). "RSS और भारतीय राजनीति में दीर्घकालिक राजनीतिक रणनीति